विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

कोड न.: 102

हिन्दू अध्ययन

इकाई-1 : तत्त्व विमर्श

1. ''हिन्दू'' शब्द-बोध (ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं जीवन-दृष्टिपरक)।
2. अष्टादश विद्याएँ, उपांग तथा प्रमुख आचार्य।
3. विभिन्न परम्पराओं में पदार्थ/तत्त्व और इनमें अन्तर्निहित एकसूत्रता।
4. स्त्री-विमर्श : समानान्तर सम्प्रभुता के सिद्धान्त।

   (क) आत्माभिव्यक्तियाँ : वाक् सूक्त, देव्यथर्वशीर्ष सूक्त तथा भगवद्गीता (10.20.40)।

   (ख) अर्धनारीश्वर-अवधारणा (बृहदारण्यक उपनिषद् 1.4.3)
5. शक्ति तथा प्रकृति तत्त्व।
6. जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में स्त्री-विमर्श।
7. वेदान्त में एकात्मता तथा जैन, बौद्ध, न्याय-वैशेषिक दर्शनों और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में अंतःसम्बद्धता तथा सर्वसमावेशिता का परिणामी विचार।
8. वर्ण (बृहदारण्यक उपनिषद् 1/4/10-15, भगवद्गीता 18/41-45), जाति और 'कास्ट' (caste) के बीच अन्तर।
9. विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के ऋषियों और संतों की गणना।

इकाई -2 : धर्म तथा कर्म विमर्श

1. धर्म : परिभाषाएँ और अर्थ (महाभारत, मनुस्मृति, वैशेषिक सूत्र, गीता-शांकरभाष्य-उपोद्घात एवं श्रमण परम्पराओं में परिभाषाएँ)।
2. धर्म तथा 'Religion' (पन्थ, मजहब) के बीच अन्तर।
3. धर्म के प्रकार : प्रवृत्तिमूलक, निवृत्तिमूलक।
4. धर्म : वैदिक तथा श्रमण परम्पराओं एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में संयोजक सिद्धांत।
5. वर्णाश्रम धर्म और चयन का अधिकार।
6. राज-धर्म, आपद्-धर्म, समाज-धर्म तथा स्व-धर्म।
7. कर्म, विकर्म, तथा अकर्म (भगवद्गीता 4.16 तथा उस पर शांकरभाष्य)।
8. षड्विध कर्म : नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त, उपासना, काम्य तथा निषिद्ध।
9. निष्काम तथा सकाम कर्म।
10. कर्म, फल, प्रारब्ध तथा संस्कार।

इकाई -3 : पुनर्जन्म-बन्धन-मोक्ष विमर्श

1. जीव की अवधारणा।
2. बन्धन की परिभाषाएँ (प्राकृतिक, वैकृतिक, दाक्षिणक- सांख्यकारिका 44 एवं उस पर सांख्यतत्त्वकौमुदी)।
3. बन्धन का मूल कारण और इसकी प्रक्रिया: (भगवद्गीता 3.37-41, 2.62-66), प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त।
4. धर्म का प्रेरकतत्त्व पुनर्जन्म।
5. मोक्ष और निर्वाण की संकल्पनाएँ।
6. मोक्ष प्राप्ति के विविध मार्ग (योग) : अभ्यास, कर्म, भक्ति, ज्ञान।

इकाई -4 : प्रमाणसिद्धान्त

1. प्रमाण की परिभाषा।
2. शास्त्र-विश्लेषण की भारतीय पद्धति : प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय तथा प्रमा।
3. विभिन्न प्रकार के प्रमाणों की प्रकृति, परिभाषा, विधियाँ और सीमाएँ।
4. शब्दशक्ति-अभिधा, लक्षणा, व्यंजना और तात्पर्य ।
5. स्वतःप्रामाण्य और परतःप्रामाण्य ।
6. समसामयिक ग्रन्थों में प्रमाण के अनुप्रयोग ।